मृदुला गर्ग का कहानी साहित्य : विविध आयाम

डॉ. पुष्पलता अग्रवाल,
सहयोगी प्राध्यापक, शोध निर्देशक,
हिंदी विभाग
दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर.

हम इस स्थिति से अवगत है कि भूमंडलीकरण ने देश को विश्वग्राम में तब्दील कर दिया है, वहीं दूसरी ओर सभ्यताएँ एवं संस्कृतियाँ अपनी मौलिक विशेषताएँ खोती जा रही हैं। जीवन में सामाजिकता का लोप हो रहा है और स्वार्थ पर आधारित व्यक्तिवाद जड़ पकड़ रहा है। **"इन तमाम स्थितियों ने लेखक का चरित्र बदल दिया है। एक खास किस्म की असामाजिक नग्नता और उतावलेपन ने उसकी रचना का गाम्भीर्य छीन लिया है और वह तात्कालिक चमक का शिकार हो गया है।"**[१]

लेखक प्रभाकर श्रोत्रिय जी का यह कथन काफी हद तक वास्तविकता का बयान करता है लेकिन प्रत्येक रचनाकार को एक ही तराजू से तौलना कहाँ तक संगत है? इसकी ओर भी ध्यान देना जरूरी है। बात अगर आठवें दशक की उत्कृष्ट लेखिकाओं में से एक मृदुला गर्ग की हो तो यह बात उन पर लागू नहीं हो सकती। क्योंकि यदि यह सत्य होता तो अपने लेखन के कारण वे कभी विवादों में न फँसती। वास्तव में समाज की विद्रूपताओं और विसंगतियों को किसी प्रकार का पलोथन न लगाते हुए प्रस्तुत कर उन्होंने समाज के प्रति प्रतिबद्धता एवं साहसिकता का ही परिचय दिया है, इसमें कोई संदेह नहीं।

हम नकार नहीं सकते कि साहित्य और समाज का घनिष्ठ संबंध होता है। समाज में घटित घटनाएँ, प्रसंग एवं संवेदनाएँ ही साहित्य में प्रतिबिंबित होती हैं। साहित्यकार अपनी सामर्थ्यशीलता के बलबूते पर उन्हें ही शब्दों का जामा पहनाता है। आठवें दशक में अनेक लेखिकाओं ने साहित्य जगत में अपनी उपस्थिति दर्ज की किंतु जिन्होंने विषय-विविधता, लेखन की विशिष्टता और शैली-शिल्प द्वारा हिंदी साहित्य को समृद्ध किया, उनमें एक नाम है - मृदुला गर्ग। उनके संदर्भ में डॉ. गिरीश रस्तोगी का कथन महत्वपूर्ण है, **"उनका सम्पूर्ण लेखन स्त्री-पुरुष संबंधों के सूक्ष्म से सूक्ष्म स्तरों को लेकर चलता है और उसमें अभिव्यक्तिगत ताजगी और अनुभव से उपजा अलग रंग होता है।"**[२]

इसके अतिरिक्त सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा विविध ज्वलंत प्रश्नों को भी उन्होंने साहित्य के केंद्र में रखा है। एक ओर मध्यवर्ग और निम्नवर्ग उनकी कहानियों के केंद्र में रहा तो दूसरी ओर मानवीय मूल्यों का हनन, युवा पीढ़ी की बेरोजगारी, दाम्पत्य एवं दाम्पयत्येत्तर संबंध, प्रताड़ित नारी की वेदना, कामजनित कुंठाएँ, सामाजिक-आर्थिक वैषम्य अभिशप्त वृद्धावस्था, आम-आदमी की जागरूकता तथा विद्रोह जैसे विविध विषयों पर साहित्य सृजन कर उन्होंने अपनी रचनाधर्मिता निभाई है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि, **"मृदुला गर्ग की कहानियाँ अनेक महिला कथाकारों की तरह सास-बहू के आँसू तोड़ प्रसंगों से अलग हटकर हैं और सिर्फ नारी जीवन पर ही केंद्रित नहीं है। इन्होंने भी मानव जीवन के विविध पक्षों को विभिन्न कोणों में छुआ है और हिंदी साहित्य को कुछ अविस्मरणीय कहानियाँ दी हैं।"**[३] यह कथन प्रमाणित करता है कि उनकी कहानियों का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है।

समाज में जैसे-जैसे बदलाव आता गया और जिसमें मानव समाज को केवल प्रभावित ही नहीं किया, परिणाम भी डाला - उसकी सशक्त अभिव्यक्ति उन्होंने की है। जिन विषयों को लज्जा का विषय माना जाता था। जो विषय सिर्फ पुरुष का क्षेत्र थे उन विषयों को भी मृदुला गर्ग ने स्पर्श किया है। पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण ने मानवीय संबंधों के बीच दरार उत्पन्न कर दी है। व्यक्तिवादी वृत्ति एवं स्वार्थपरता के कारण युवा पीढ़ी दायित्वहीन होती जा रही है। परिणामत: भीड़ के बीच भी व्यक्ति अकेलेपन का शिकार है। इन सारी स्थितियों को मृदुला जी ने वाणी दी है। इनकी कहानियों में निम्नवर्गीय दयनीयता के साथ-साथ उसका विद्रोह भी अभिव्यक्त हुआ है। उच्चवर्ग की दोगली वृत्ति पर करारा प्रहार

करती हैं वे 'टुकड़ा-टुकड़ा आदमी' कहानी के द्वारा। समाज में कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनके खाने के दाँत और दिखाने के दाँत और होते हैं। ऊपरी तौर पर संवेदनशीलता होती है लेकिन अंदर से वे काईयाँ प्रवृत्ति के होते हैं। लेखिका उनके जीवन की इस सच्चाई को यहाँ उद्घाटित करती हैं। निम्न वर्ग का विद्रोह 'उसका विद्रोह', 'अनाड़ी' तथा 'बेनकाब' कहानी में हमें मिलता है। लेकिन कुछ कहानियों में यह रूप भी आया है कि अन्याय-अत्याचार से त्रस्त हो निम्नवर्गीय पात्र खुदकुशी कर लेता है। 'सुबह भी अंधेरे से खाली नहीं' कहानी इसका प्रमाण है।

लेखिका ने धार्मिक क्षेत्र में व्याप्त स्थितियों पर भी लेखनी चलाई है। धार्मिक अंधविश्वास, पाखंड, साधु-संतो की वासनात्मक वृत्ति तथा धोखा-धड़ी लेखिका की चिंता का विषय रहे हैं। आम जनता की निरक्षरता एवं अज्ञानता का फायदा उठा साधु-महात्मा अपना उल्लू सीधा करते हैं। इन स्थितियों के प्रति लेखिका जनमानस को सजग करना चाहती हैं। हमारे देश की यह कैसी विडंबना है कि एक ओर हम वैज्ञानिक प्रगति की बातें करते हैं, चाँद पर पहुँचने का दावा करते हैं और दूसरी ओर बाबा साधू द्वारा किए जाने वाले चमात्कारों पर आँख मूँदकर विश्वास कर लेते हैं। लेखिका ने इस स्थिति का पर्दाफाश 'दूसरा चमत्कार' कहानी द्वारा किया है।

मृदुला गर्ग ने अनेक सामाजिक समस्याओं को साहित्य में प्रस्तुत कर समाज में जागरूकता लाने का प्रयास किया है। लेखिका वर्ग भेद को समाज विकास में बाधक मानती हैं। समाज में अमीर और गरीब के बीच की खाई ही शोषण का मूल कारण है। उच्चवर्ग द्वारा निम्नवर्ग का शोषण मनुष्य की कुत्सित मानसिकता का द्योतक है। उच्चवर्ग की इसी मानसिकता का चित्रण 'मौत में मदद' कहानी में वे करती हैं। अमीर व्यक्ति जीते जी निम्नवर्ग के प्रति संवेदनशीलता नहीं दर्शाता लेकिन उसके मरने के बाद कफन और दाह संस्कार के लिए आर्थिक मदद कर गरीबों का सरपरस्त होने का झूठा दिखावा करता है।

वैश्वीकरण के बाजारवाद के परिणाम स्वरूप रिश्तों में आया बिखराव, आत्मकेंद्रित वृत्ति, स्वार्थपरता, मूल्यों का ऱ्हास तथा पाश्चात्य का अंधानुकरण आदि भी लेखिका की चिंता के कारण हैं। इसका यथार्थ चित्रण 'अलग-अलग कमरे' तथा 'वितृष्णा' कहानी में हमें मिलता है। इक्कीसवीं सदी में रिश्तों में तीव्रता से आए बदलाव को 'अलग-अलग कमरे' के आधार पर समझा जा सकता है। यह हकीकत हैं कि सभी अपने-अपने में सीमटकर जी रहे हैं। खून के रिश्तों में जो प्रगाढ़ता और मधुरता होनी चाहिए, वह खत्म-सी होती जा रही है। परिणाम: मानवीय मूल्यों का ऱ्हास, असहनशीलता, मूल्यों की टकराहट, अंतरजातीय विवाह तथा प्रेम विवाह वर्तमान सदी का सत्य बनती जा रही है। आधुनिकता के कारण पती-पत्नी, बेटी, बहन, माता आदि संबंधों में जो परिवर्तन हुआ है उसे प्रस्तुत करना भी मृदुला जी की कहानियों का उद्देश्य रहा है। आधुनिक युग की विसंगतियों से समाज को रूबरू करवाकर लेखिका उसका निराकरण करना चाहती हैं। ताकि संबंधों की मधुरता बनी रहे। काफी हद तक दाम्पत्य संबंधों में बिखराव, टूटन तथा अलगाव के निर्माण का कारण यही है। डॉ. वैशाली देशपांडे लिखती हैं, **"मृदुला गर्ग ने 'वितृष्णा' कहानी के माध्यम से पति-पत्नी के संबंधों में आए ठहराव को अंकित किया है।"**[४]

स्त्रीवादी लेखिका होने के कारण नारी के विभिन्न रूप उनकी कहानियों में आए हैं। वैचारिक धरातल पर भी उनमें भिन्नता के दर्शन होते हैं। नारी गृहिणी के रूप में भी आई है तो आधुनिक विचारों से युक्त स्वच्छंद नारी भी यहाँ चित्रित है। ऐसी स्त्री भी है जिसकी अपनी सोच है, जो अपनी इच्छानुसार जीवन जीना चाहती है। 'एक और विवाह' कहानी की 'कोमल' और 'रानी' अत्यधिक आधुनिक विचारों का प्रतिनिधित्व करनेवाली तथा स्पष्टवादी पात्र है। वास्तव में इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने विवाह संस्था पर ही प्रश्नचिह्न खड़ा कर दिया है। तो दूसरी ओर 'खरीदार' की 'नीना' जैसी स्वाभिमानी पात्र भी है जो बदसूरती के कारण नकारे जाने पर स्वयं आत्मनिर्भर बनने की तैयारी करती है। ऐसे समय प्रेमचंद सहजावाला का कथन 'नीना' के संदर्भ में योग्य-प्रतीत होता है कि, **"आज की शिक्षित व शहरी नारी अब ना तो अनुचरी है और न केवल सहचरी ही रह गई है। आज की स्त्री संपूर्ण आत्मविश्वास के साथ अब एक व्यक्तित्व बनकर अपने चुने हुए रास्ते पर अग्रसर है।"**[५] नीना द्वारा आई.ए.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण होकर सहाय्यक कमीश्नर बनना तत्पश्चात पदोन्नति प्राप्त करके गृहमंत्रालय में संयुक्त सचीव के पद पर कार्यरत होना इसे ही प्रमाणित करत है।

युवा पीढ़ी की संवेदनशून्यता के परिणाम स्वरूप अभिशप्त जीवन जीते वृद्ध भी इसकी कहानियों के केंद्र में है। युवा पीढ़ी तथा परिवारिक सदस्यों द्वारा उपेक्षित वृद्धों की समस्याओं को भी मृदुला जी ने उद्घाटित किया है। 'बाँस-फल' कहानी में अपने ही घर में दयनीय जीवन जीने के लिए मजबूर 'दादी' का चित्रण कर लेखिका ने संवेदनशीलता का परिचय

दिया है। 'तीन किलो की छोकरी' कहानी में अस्पृश्य स्त्री (दाई) - जो दूसरों के सुख-दुख को अपना सुख-दुख समझती है। 'बीच का मौसम' कहानी में 'माया' के माध्यम से अपने अस्तित्व के प्रति सजग स्त्री का वर्णन किया है जो समाज और परिवार की चिंताकर अपनी नौकरी छोड़ना नहीं चाहती। राजनीतिक चेतना से ओतप्रोत 'शहर के नाम', 'टोपी', 'अगली सुबह' तथा 'उलटी धारा' जैसी उत्कृष्ट कहानियों भी उन्होंने लिखीं।

स्पष्टत: कहा जाए तो नारी जीवन का त्रासदी, संघर्ष और वर्तमान समय में उसके बदलते तेवर आदि का सशक्त व यथार्थ चित्रण करने में उन्हें अद्‌भुत सफलता मिली है। यह भी सत्य है कि नारी ने प्रत्येक क्षेत्र में पदार्पण किया है, वह आत्मनिर्भर हुई है फिर भी शोषण की प्रक्रिया अभी भी चल रही है। शांतम्मा, सुवर्णा, होमवती तथा दलित स्त्री-कहानियों में आए इन पात्रों द्‌वारा लेखिका इस सच को भी रेखांकित करते चलती हैं। नारी के संदर्भ में लेखिका का स्वयं यह विश्वास है कि **"जब तक महिलाएँ अपने आजाद होने की जरूरत को नहीं समझेंगी, अपनी लड़ाई खुद नहीं लड़ेंगी, अपने लिए स्वतंत्रता के आयाम खुद नहीं तय करेंगी तय करेंगी तब तक दलित और कमतर शब्द के औदे से बाहर आना सम्भव नहीं।"**[६]

यही कारण है कि इसके अधिकतर पात्र हालातों से समझौता नहीं करते, हार नहीं स्वीकारते बल्कि संघर्षों का सामना कर परिस्थितियों को अपने अनुकूल करने के लिए प्रयत्नरत रहते हैं।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि समाज के विविध पहलुओं को मृदुला जी ने कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। आम आदमी के संघर्ष से लेकर धन सम्पन्न भ्रष्ट व्यक्ति की विलासिता की झाँकी उनकी कहानियों में देखी जा सकती है। सामान्य गृहिणी से लेकर अस्मिता एवं अस्तित्व के प्रति सजग, स्वाभिमानी एवं विद्रोही नारी भी कहानियों के केंद्र में है। हर वर्ग तथा हर स्तर का जीवन संघर्ष उनकी कहानियों में दृष्टव्य है यही उनके लेखन की विशिष्टता है।

संदर्भ ग्रंथसूची:-

०१. भूमण्डलीकरण और साहित्य (लेख), प्रभाकर श्रोत्रिय, पृ. ७५
०२. समकालीन हिंदी नाटककार, डॉ. गिरीश रस्तोगी, पृ. १९१
०३. समकालीन हिंदी कहानी, बलराम, पृ. १३२
०४. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, डॉ. वैशाली देशपांडे, पृ. ६०
०५. हंस, जून - २०१२, पृ. ८६
०६. हंस, सितंबर - २००८, पृ. ६६